चेतना विकास मूल्य शिक्षा

कक्षा – 1

प्रकाशक

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद)

लेखन
साधन भट्टाचार्य
श्रीराम नरसिम्हन
कुमार संभव, सोम त्यागी
बी.आर. अग्रवाल, अंजनी कुमार
श्रीमती सुवर्णा योगेश

प्राक्कथन

मानवीय शिक्षा का प्राक्कथन एक आवश्यकता के रूप में हमें महसूस हुआ। क्योंकि यह पाठ्यपुस्तिका का उपक्रम पहली कक्षा से प्रस्तुत किया गया है। क्रम से परंपरागत होने तक सिलसिला बना ही रहेगा। सहअस्तित्व अपने स्वरूप में व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक–एक वस्तु जैसा परमाणु, अणु, ग्रह, गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा। यह डूबी, भीगी, घिरी होने के आधार पर नियंत्रण, क्रियाशीलता और ऊर्जा सम्पन्नता प्रत्येक वस्तु में नित्य प्रमाण के रूप में देखा गया है। साथ में यह भी समझा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित सम्पूर्ण एक–एक वस्तुओं की अविभाज्यता नित्य वर्तमान है। यही सह–अस्तित्ववादी विश्व–दृष्टिकोण का मूल रूप है। ऐसे सहअस्तित्व नित्य प्रभावी रहना स्वाभाविक है।

सहअस्तित्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम कक्षा से अर्थात् अक्षराभ्यास से चलकर शब्दों का अभ्यास और शब्दों के अभ्यास से अर्थ का अभ्यास, अर्थों के अभ्यास के तात्पर्य में हर शब्द किसी वस्तु का, क्रिया का अथवा फल–परिणाम का नाम है। ऐसा अर्थ इंगित होना ही शब्द से अर्थ समझा गया है। इसलिए अर्थबोध करने के उपक्रम में शिक्षा विधा को अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रस्तुत हुआ। यह पठन विधि से अर्थ बोध तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसे प्रस्तावित करना इसलिए आवश्यक समझा गया कि मानव सह–अस्तित्व विधि से ही समुदाय चेतना से मानव चेतना में संतुलित होना है। मानव चेतना का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीने का प्रमाण है। इससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की पहचान होना स्वाभाविक है।

यह तो सटीक है कि विगत विधि से जो पाठ–पठन का लक्ष्य था, उसे आगे पढ़ाने के जिल भी उपायों को खोजा गया है, वह सब सार्थक है, मूलतः मानवीय शिक्षा के अभाव वश सामुदायिकता, मतभेद, साम, दाम, दण्ड, भेद, परस्पर समुदायों की निहित अतिशोधों का विश्वास प्रयोग हो चुका है। इन सब अभिशापों से मुक्ति पाने की आकांक्षा मानव में निहित होना भी पाया गया। इसलिए मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण आवश्यक समझा गया है। इसे क्रियान्वयन करने की क्रमविधि से प्रस्तुत किया।

मानवीय शिक्षा में मानव का अध्ययन प्रधान उद्देश्य है। इस उद्देश्य को साथ्रक बनाने के क्रम में प्रथम कक्षा से ही सूत्रपात रूप में मूल्य संबंधी और शरीर के अवयव संबंधी शब्दों का अधिकतम चयन किया गया है। साथ में परस्पर मानव संबंधों से संबंधित शब्दों का चयन किया गया है। इसे हर बालक अथवा किशोर आसानी से पहचान पायेगा। ऐसी हमारी स्वीकृति है। यह सार्थक और सफल होना पाया गया है। भव्यि में मूल्यांकन होता रहेगा। इस विधि से सर्व शुभहोने की कामना है।

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद)
श्री नर्मदांचद, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

भूमिका

विज्ञान शिक्षा से छात्र–छात्राओं एवं युवाओं में तर्कशक्ति का अभूतपूर्व विकास हुआ है। जिससे आस्था (बिना जाने मान लेना) की प्रवृत्ति में कमी आई है। अतः परंपरागत शैली जिसमें यह करो, यह न करो अथवा "ऐसा जीना चाहिए" आदि उपदेश विद्यार्थियों में अब प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी शिक्षा के सार्वभौम स्वरूप पर चिंतन की आवश्यकता है।

यूनेस्को ———— द्वारा अपेक्षित शिक्षा के चार स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ ————— अर्थात् "साथ–साथ जीना सीखना" पर जोर दिया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने मानव मूल्य शिक्षा हेतु निम्न मार्गदर्शन दिया है–

1. पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविश्वास, कर्मकाण्ड व पूजन पद्धति से मुक्त हो।
2. पाठ्यक्रम रहस्यवाद, सम्प्रदायवाद व व्यक्तिवाद से मुक्त हो।
3. पाठ्यक्रम "करो, न करो" आदि उपदेश न होकर तर्कपूर्ण हो, तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोग एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हो।
4. पाठ्यक्रम को आचरण में प्रमाणित किया जा सकता हो।
5. पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हो।

आधुनिक शिक्षा को रोजगारोन्मुखी ही नहीं बल्कि परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी भी होने की आवश्यकता है, ताकि हर परिवार समाधान, समृद्धिपूर्वक जी सके। समाधान का अर्थ मानव संबंधों में परस्पर तृप्ति एवं प्रकृति के साथ संतुलनपूर्वक जीना है। समृद्धि अर्थात् अभाव–मुक्त जीना इस आशा की पूर्ति के लिए मानवीय मूल्यों के शिक्षक की आवश्यकता महसूस की जाती रही है।

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) उपरोक्त सभी कसौटियों को पूरा करता है, जिसका परिचय "जीवन विद्या शिविरों" के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। मध्यस्थ दर्शन से विस्तृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव में पाँच सद्गुणों को सुनिश्चित करती है –

1. स्वयं में विश्वास
2. श्रेष्ठता का सम्मान
3. प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन
4. व्यवसाय में स्वावलंबन
5. व्यवहार में सामाजिकता

आज धरती एक गाँव ———— हो गयी है। अतः विश्व शांति हेतु वैश्विक नागरिक ——— अर्थात् सार्वभौम मानवीय आचरण को पहचानने की आवश्यकता है। चेतना विकास मूल्य शिक्षा के प्रकाश में सार्वभौम मानवीय आचरण, सार्वभौम मानवीय शिक्षा, सार्वभौम मानवीय व्यवस्था, सार्वभौम मानवीय संविधान का व्यावहारिक स्वरूप व्याख्यायित होता है। साथ ही "मानव में समानता" व धर्मनिरपेक्षता का व्यावहारिक स्वरूप प्रकट होता है जिससे "मानव जाति एक, मानव धर्म एक" पूर्वक जीने की राह प्रशस्त होती है।

विश्व के इतिहास में शायद पहली बार हुआ है कि संपूर्ण दर्शन को प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर पहुंचाया गया हो। राज्य शासन ने कक्षा 10वीं तक अध्ययन करने वाले सभी बच्चों को सहअस्तित्व का महत्व इस दर्शन के माध्यम से सिखाने का निर्णय लिया है। यह पुस्तक इसी प्रयास का एक भाग है। हम आशा करते हैं कि शिक्षक स्वविवेक के साथ इस पुस्तक का उपयोग करके इस महती उद्देश्य की पूर्ति करेंगे। जाहिर है आपके सुझावों का हमें हमेशा इंतजार रहेगा।

नंद कुमार (भा.प्र.से.)

संचालक

लेखकीय

प्रत्येक शिशु जन्म से ही न्यायापेक्षी, सही कार्य–व्यवहार करने वाला एंव सत्य वक्ता होता है, परन्तु न्याय, सही कार्य–व्यवहार एवं सत्य से शिशु अनभिज्ञ रहता है। इन्हें समझने के लिए वह परम्परा पर, मुख्यतः शिक्षा परम्परा पर आश्रित रहता है। इस हेतु आज्ञापालन, अनुसरण, अनुकरण एवं जिज्ञासा सम्पन्न रहता है।

प्राथमिक कक्षा में प्रवेश के पूर्व ही सभी शिशु अपनी मातृभाषा को समझने व बोलने की योग्यता से सम्पन्न होते हैं एवं अपने परिवेश के प्रायः सभी कार्य–व्यवहार व वस्तुओं को पहचानते हैं। अपने परिवेश के अनुसार मान्यता व विचार संपन्न रहते हैं।

विद्यालय में प्रवेश के साथ शिक्षा में अक्षर, शब्दों एवं अंकों को पहचानने व लिखने का कार्य शिक्षा की प्रमुख वस्तु होती है जबकि सभी विद्यार्थी अनेक वाक्यों को बोलने, अनेक वाक्य बनाने में समर्थ रहते हैं। उनकी इस पूर्व योग्यता को बढ़ाने के लिए शिक्षा में स्पष्ट कार्यक्रम का अत्याभाव है फलतः शिक्षा में पर्याप्त रूचि नहीं बनती। इसी के साथ प्राथमिक स्तर पर स्वयं पढ़कर समझने–सीखने की योग्यता अधिकांश विद्यार्थियों में विकसित नहीं होती है और वे अधिकांशतः शिक्षक पर ही आश्रित रहते हैं। इसे पूरा करना ही शिक्षक की सार्थकता है।

अस्तु विद्यार्थियों की योग्यता के अनुसार मानवीय चेतना विकसित करने हेतु एवं शिक्षकों की सार्थकता प्रमाणित होने के उद्देश्य से 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के पाठ्यपुस्तकों को लिखा गया है।

हमें विश्वास है यह पुस्तक इन अर्थों को प्राप्त करने में सफल होगा।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा की पुस्तक प्रथम बार लिखी गई है अतः इसमें सुधार की अपार सम्भावनाएँ हैं। विद्वान अध्यापकगणों से इस हेतु सतत् मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

लेखकगण

प्रथम संस्करण की भूमिका

चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर कक्षा 1 से 5 तक पुस्तक 2009 में लिखी गई।

प्रथम बार पुस्तक लिखने तथा अल्प समय में इसे पूरा करने के कारण व्याकरण संबंधी एवं टंकण संबंधी भूल भी रही। कक्षा 1 से सभी पाठ कविता में हैं। एवं कविता में तुकबंदी का अभाव था।

प्रथम संस्करण में शिक्षा की वस्तु को यथावत रखते हुये व्याकरण में सुधार किया गया है एवं कविताओं में तुकबंदी पर थोड़ा ध्यान दिया गया है। कुछ तकनीकी से संबंधित पाठों को हटा दिया गया है।

हमें विश्वास है पुस्तक विद्यार्थियों के लिए सुबोध होगा।

लेखकगण

अनुक्रमणिका

भाग	पाठ	नाम	पृ. संख्या
1. मानव लक्ष्य	पाठ 1	अम्मा	
	पाठ 2	आहार	
	पाठ 3	इच्छा	
	पाठ 4	ईक्षण	
	पाठ 5	उत्सव	
	पाठ 6	ऊष्मा	
	पाठ 7	ऋतु	
	पाठ 8	एक	
	पाठ 9	ऐक्य	
	पाठ 10	ओठ	
	पाठ 11	औषधि	
	पाठ 12	अंग	
	पाठ 13	अः स	
	पाठ 14	कक्षा	
	पाठ 15	खलिहान	
	पाठ 16	गगन	
	पाठ 17	हार	
	पाठ 18	चयन	
	पाठ 19	छवि	
	पाठ 20	जल	
	पाठ 21	झरना	
	पाठ 22	टहलना	
	पाठ 23	ठहरना	
	पाठ 24	डगर	
	पाठ 25	ढलना	
	पाठ 26	तरल	
	पाठ 27	थपकी	
	पाठ 28	दया	
	पाठ 29	धरती	
	पाठ 30	नमन	
	पाठ 31	परिवार	
	पाठ 32	फल	
	पाठ 33	बहन–भाई	
	पाठ 34	भला	
	पाठ 35	मन	
	पाठ 36	यश	
	पाठ 37	रचना	
	पाठ 38	लक्ष्य	
	पाठ 39	वन्दना	
	पाठ 40	शरीर	
	पाठ 41	षटकोण	
	पाठ 42	समान	
	पाठ 43	हम	
	पाठ 44	क्षमता	
	पाठ 45	त्रय	
	पाठ 46	ज्ञान	

वंदना

वंदना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की।।
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरंतरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी?
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी।।
श्रद्धा समर्पित जिनसे आए, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना।।
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश जयोति से भरा।।
–प्रदीप पूरक, बिजनौर (उ.प्र.)

ikB&1

¡Ètà

¡Ètà tÊã ¡°²|ã ¡Ètà
¡Ètà tÊã ÃuàÊã ¡Ètà ññ
yrÑ- yrÑ t l kªààmã
tvtv§ýÊ ÂàÑvàmã ¡Ètà ñ
âÂàm sàkÂà t l §ýÊàmã
Îààvà §ýà âskwàmã ¡Ètà ññ

hv - hv t t l q¼|àmã
yj-yj §ýÑ yt làmã ¡Ètà ñ
ysã §ýàu t l âyhàmã
yÑã ÊàÑ âÀhvàmã ¡Ètà ññ

¡Ètà tÊã ¡°²|ã ¡Ètà
¡Ètà tÊã ÃuàÊã ¡Ètà ññ

ikB&2

¡àÑàÊ

¡àÑàÊ Ñ ¡àÑàÊ Ñ
qâ˜| ¢y§ýà yàÊ Ñ
sh vªà mà §ýÊ ¡àÑàÊ
Ñàm ¢y§ý ¡Âà§ý Zà§ýàÊ ñ
sàm-Êà¹|ã Îàà§ý Ààv
Ào - ÀÑã ¡àÊ twà Äýv ññ
oÊmã §ýà Ñ uÑ £qÑàÊ
jrà-jrà §ýÊ §ýÊ ¡àÑàÊ ñ
mÂà §ýà âtvmà ¢y§ýà yàÊ
mÂà y Ñt §ýÊm Ñ £q§ýàÊ ññ
¡àÑàÊ Ñ ¡àÑàÊ Ñ
qâ˜| ¢y§ýà yàÊ Ñ ñ

ikB&3

¢°²|à

¢°²|à Ñàmã Îààvà kà¤ý
hr q¼| yr§ý tÂà sà¤ý ñ
ªàÚkÂàà §ýL ¡àÖàà tàÂà
ÃuàÊ r»|à y ÑÊÀt qà¤ý ññ

âtvkv hv yªà ysã §ý
ÐwÐn ÊÑ uÑ tÊã ¢°²|à ñ
ysã r»|à §ýã ywà t
tªàÂà ÊÑ uÑ tÊã ¢°²|à ññ

ikB&4

¢Õà½à

yhã Ñàm Ñt m¾Õà½à
Ñàmà Ñ kr ¢Õà½à ñ
y¾u yt l Âàà ÑÊÕà½à
§ýÑvàmà Ñ ¢Õà½à ññ
¢Õà½à y Ñàmà âÂàÎju
âÂàÎju t Ñt kãm ñ
yàn ysã ÊÑm âÂàsu
âtv - kv §ýÊ kãm ññ

ikB&5

£¾yw

Îààvà §ýà ÑÊ âÀÂà
hâÎàuà vàmà Ñ ñ
kÂtâÀwy §ýà £¾yw
ÑÊ wx ¡àmà Ñ ññ
Âààt§ýÊ½à §ýà £¾yw
yr§ýà sàmà Ñ ñ
ÑÊ ÀÎà §ýàv t uÑ
Ñàmà kàmà Ñ ññ

ikB&6
¤ýÏtà
Àhà ràv yu §ýL yxtà
âÀÂà sÊ uÑ Àmà ¤ýÏtà ñ
ªàtJ t rjm ¢yy
Îàãm ¦ým t sàmã ¤ýÏtà ññ
q§ým sàkÂà ¢yy
r»þ §ýàt §ýL Ñàmã ¤ýÏtà ññ

ikB&7
¦ým
oþ»þã ªàtJ wxà
ÑÊ wx ¡àmã kàmã ñ
oþ»þã ªàtJ wxà
¦ým¥ §ýÑvàmã ññ

ikB&8
¥§ý
yÊk ¥§ý jÂÀà ¥§ý
oÊmã sã Ñ ¥§ý ñ
¢yt ÊÑm Ñt yr
tàÂàw kàãm ¥§ý ññ
¡ãâÀ ¥§ý Ñ âªàÂàmã §ýà
¡Âm §ýsã Âà Ñàmà ñ
¡Îà ¥§ý uÑ oÊmã §ýà
ÂàãÎà §ýsã Âà Ñàmà ññ

ikB&9
¥§ýu
,¡D;
ऐक्य हुई वर्षा की बूंदे
पोखर के जल में।
ऐक्य हुआ जल नदियों का
सागर के जल में।
ऐक्य हुए मन मानव के
समाधान के फल में।।

ikB&10
¡àoþ
mÊv ysã Ñt ¢yy qåm
ÑyÂà t yÑuàªàã ¡àoþ ñ
sàkÂà sã Ñt ¢yy §ýÊm
tÂà §ýL ràvã ràv ¡àoþ ññ

ikB&11
¡àxâo
kr kr Ñàmã mÂà t Íuàão ñ
ÐwÐn rÂààmã ¢y ¡àxâo ññ
¡ày-qày uÑ ât vmã Ñ ñ
oÊmã t uÑ qvmã Ñ ññ
mvyã ¡ÀÊ§ý kàuÄýv ñ
§ýÊm mÂà §ýà u âÂàtv ññ

i kB&12

¡ ªà

Ñàn qÊ ¡àh Âàà§ý

Ñàm yr yªà-yªà ñ

§ýàu §ýÊ ¢Âày ¡qÂà

§ýÑvàm yr ¡ªà ññ

yÂàm ¡ªà y, jvm ¡ªà y ñ

ÊÑm Ñt yr, ¡°²þ ¼þªà y ññ

i kB&13

¡ ßy

¡ßy Âààt Ñ àÀÂà §ýà

Zà§ýàÎà sã §ýÑvà¥ ¡ßy ñ

¡ßy Âààt u ÖààÂà §ýà

àÀhmà àkyy wÑ Ñ ¡ßy ññ

i kB&14

§ýÕàà

kãÂà §ý ¼þªà ªà¼þm Ñ ñ

§ýÕàà t Ñt q¼þm Ñ ññ

àtv§ý ¡àªà r¼þm Ñ ñ

§ýÕàà t Ñt q¼þm Ñ ññ

ªàÚkã Ñt q¼þàm Ñ ñ

kãwÂà ÖààÂà àyhàm Ñ ññ

yr§ýà ÖààÂà r¼þàm Ñ ñ

yÑã ÊàÑ àÀhvàm Ñ ññ

i kB&15

hàvÑàÂà

qàwÂà Ñàm Ñ hàvÑàÂà

Äýyv §ýà¹þ§ýÊ Êh à§ýyàÂà ñ

tà»þ - tãk §ýàÀà oàÂà

£Ùàt hmã §ýL qÑjàÂà ññ

i kB&16

ªàªàÂà

yÊk jàÀ ¡àÊ màÊ

ysã ªàªàÂà t ÂuàÊ - ÂuàÊ ñ

yàn yàn yÀà u ÊÑm

yàn - yàn u i tà §ýÊm ññ

ªàÑ-ªààvà y sÊà ªàªàÂà

àÀhm sã Ñ hr yiÀà ñ

ÀÊ -ÀÊ Äývà uÑ ªàªàÂà

¡wvà§ýÂà §ýÊ Ñ¥ tªàÂà ññ

i kB&17

iÊ

§ýÑã ¢¹þ §ýL §ýÑã Äýy §ýL

Ñàm u q¨§ý §ý°j ñ

§ýyã sã Ñà ÊjÂàà ¢y§ýL

ÊÑm r¼þ - r°j ññ

Îããm £Ï½à wxà y rjm

§ýÊm Ñ ¡àwày ññ

iÊ t yàm iÊ t kªàm

yàn yàn Ñã wày ññ

ikB&18

juÂà

¡qÂàã Îàâ Qý §ýà ¡r
Ñt yr kàÂà tàÂà ñ
yÀà- yÀà jÂàÂà §ýL
mà§ým §ýà qÑ jàÂà ññ
juÂà §ýàu §ýà ÑÊ qv
¡àÎàà y Ñã §ýÊm ñ
qày ÀÊ §ýL ÑÊ wÐm
Ñt yr jÂàm ÊÑm ññ

ikB&19

²âw

tàmà §ý tÂà t
r° jà §ýL ²âw ÃuàÊã ñ
ªàÚ §ý ¡àhà t
âÎàÏuà §ýâ ²âw ÂuàÊã ññ

ikB&20

kv

wxà y kv ¡àmà Ñ
yr§ýL Ãuày r làmà Ñ ñ
Äýyv £ªàmã ¢yy
kãm kãw kv y ñ
qãm tàÂàw ¢y§ýà
q§ýmà sàkÂà kv y ñ
§ýÊm ¢yt ÐÂààÂà
ovm §ýq» kv y ñ
kv §ý¢ §ýàu t yÑuàªàã
¢y§ýL rÀ-rÀ £quàªàã ññ

ikB&21

lÊÂàà

qwm y âÂà§ývã âÂàtv kv oàÊà ñ
lÊÂàà §ýÑmà ¢y§ýà kªà yàÊà ññ

ikB&22

¹ÑvÂàà

Zààmß §ýàv ¹ÑvÂà kà¥
mÂà §ýà Ñt ÐwÐn rÂàà¥ ñ
yr§ý âv¥ yÊv Íuàuàt
§ýÊm ¢y§ýà yrÑ - Îààt ññ

ikB&23

ºÑÊÂàà

qÕàã ºÑÊ q»à t
qàÂàã ºÑÊ t»à t ñ
ºÑÊ tàÂàw iÊ t
ºÑÊ ÂààÀuà yàªàÊ t ññ

ikB&24

»ªàÊ

»ªà sÊ§ýÊ jv
Îààvà §ýL »ªàÊ ñ
vÕu m§ý qÑ jàmã
Ñ uÑ »ªàÊ ññ

ikB&25
¼vÂàà
yàj t rmÂà ¼vmà
rmÂà t ¼vmà qàÂàã ñ
q0Îj t t yÊk ¼vmà
Îààvà t ¼vmà ÖààÂàã ññ

ikB&26
mÊv
ÑÊ ¡à§ýàÊ t ¼v mÊv ñ
rÑ ¼àv §ýL ¡àÊ mÊv ññ
mÊ âkyt wÑ Ñàmà mÊv ñ
ky Ào ÀÑã ¡àÊ Êy kv ññ

ikB&27
nq§ýL
ÊàÂà t sã Àmã nq§ýL
yàÂà t Àmã nq§ýL ñ
nq§ýL À§ýÊ t l kªààmã
tàmà ¢yy t l âyhàmã ññ

ikB&28
Àuà
¢yy qàm qàx½à
âtvmà Ñ ÑÊ qv yÊÕà½à ñ
Ñàmà ¢yy âÎàÕà½à
uÑ sàw Àuà §ýà ÑÊÕà½à ññ

ikB&29
oÊmã
ªààv Ñ u oÊmã ñ
¥§ý Ñ u oÊmã ññ
qàÂàã wàu âtSã q¾nÊ
£ªàm qào ysã ¢y qÊ ñ
sjÊ kvjÊ w Âàsj Ê
kãw ysã u oÊmã qÊ ñ
qÊ§ý Ñà§ýÊ ÊÑ qÊÐqÊ
hÎà Ñàm tàÂàw oÊmã qÊ ññ

ikB&30
Âàtàà
ÊàÑ âÀhà¢ âkÂàÂà Ñt §ýà
âÂàm âÂàm §ýÚ t Âàtàà ñ
Îàãîà l §ýà¥ Ñt £ÂÑ
§ýmÖà ÊÑ yÀà tÊà tÂà ññ

ikB&31
qáÊwàÊ
qáÊwàÊà t Ñt yr ÊÑm
yàn-yàn yr kãm ñ
yàn-yàn Ñt hàm qãm
yàn-yàn Ñã yàm ññ

§ýà§ýL §ýà§ýà ÀàÀã ÀàÀà
Ñt âyhàm kãÂàà yàn ñ
rÑÂà sà¢ ¡àÊ tàmà âqmà
§ýàu Ñt yr §ýÊm yàn ññ

ikB&32

Äýv

ràÀv §ýà Äýv wxà kv ñ
Äýv âky§ýà Ñàmà Äýyv ññ
ky ²¦àuà wÕàà t Äýv ñ
hàÀà §ý¡à Äýv Ñ kv ññ
§ýÊmà tàÂàw §ýàu y§ýv ñ
âÂà0Îjm Ñàmà âky§ýà Äýv ññ

ikB&33

rÑÂà - sà¢

ÊÑm Ñ yr yàn-yàn ñ
§ýàu §ýÊ yr yàn-yàn ññ
âtvkv §ýÊ §ýÊ q¼à¢ ñ
Ñt yr Ñ rÑÂà - sà¢ ññ

ikB&34

svà

ªàÚ¡à y v§ýÊ ÀãÕàà ñ
âÎàÎà¡à §ýà Àmà âÎàÕàà ññ
wÐm rÂààmà £quàªàã ñ
kãmà rÂà§ý yÑuàªàã ññ
§ýÊÂàà ywà sÊy§ý kàÂàà ñ
ÑÊÀt ¡°²¦ã ràm tàÂàà ññ
svà §ýàt u qÑjàÂàà ñ
ym qn qÊ jvm kàÂàà ññ

ikB&35

tÂà

ÐwàÀà §ýà yr qÑjàÂà ñ
¡°²¦à ràm tÂà y tàÂà ññ
uÑ tÂà rvÎààvå ¡Õàu
§ýÊmà uÑ mÂà §ýà yÀ Íuu ñ
kÂà kãmà Ñà§ýÊ âÂàsu
tàÂàwmà §ýà Ñ £Àu ññ

ikB&36

uÎà

§ýàu sv Ñt §ýÊm Ñ ñ
ÃuàÊ r»¦ §ýà qàm Ñ ññ
yãh ²¦à¹¦ qàm ¢yy ñ
uÎà Ñã uÎà qàm yry ññ

ikB&37

Êj Âàà

rÂàã rÂàà¢ jåkà §ýà
Ñt yr §ýÑm Ñ Êj Âàà ñ
rÂàã Ñ oÊmã ¡qÂàã
¥§ý âÂàÊàvã Êj Âàà ññ
åky âwùàvu t Ñt q¼¦
u Ñ tàÂàw §ýL Êj Âàà ññ
tàÂàw §ýÊm Ñ âÂàm-âÂàm
§ý¢ Âà¢-Âà¢ Êj Âàà ññ

ikB&38
vÕu
vÕu ÑtàÊà Ñ ytl Âàà
yr ràm ¡°²|ã yãhÂàà ñ
vÕu ÑtàÊà ¡°²|à ràv
yàn-yàn Ñã kãÂàà ññ

ikB&39
wÂÀÂàà
ªàÚkÂàà §ýL §ýÊ wÂÀÂàà
âÂàm âÂàm ¢Âày qàm ÖààÂà ñ
tà-âqmà §ýL §ýÊ wÂÀÂàà
yÀà ¢yt Ñ qÑjàÂà ññ

¡°²| ¡°²| §ýàu §ýÊ âÂàm
Îàm-Îàm £Âà§ýà wÂÀÂà ñ
yÑuàªàã yr kÂà §ý
£Âà§ýà Ñ ¡âsÂàÂÀÂà ññ

ikB&40
ÎàÊãÊ
ÎàÊãÊ ¥§ý âÂàÊàvã Êj Âàà
§ýÑm Ñ ¢y§ýà tàÂàw mÂà ñ
¡ªà ¡wuw Ñ ¢yt ytà¥
yjààvm §ýÊmà âky§ýà tÂà ññ

ikB&41
x¹|§ýà½à
Êhà¡à y rÂà §ýàÂà
§ýàÂà §ýÑvàm §ýà½à ñ
²|ß Êhà ¡àÊ ²|ß §ýàÂà
§ýÑvàm u x¹|§ýà½à ññ

ikB&42
ytàÂà
Ñt yr tàÂàw Ñ ytàÂà ñ
yr§ýL Êj Âàà Ñ ytàÂà ññ
¡ªà ysã §ý Ñ ytàÂà ñ
vÕu ysã §ý Ñ ytàÂà ññ

ikB&43
Ñt
Ñt yàn yàn Ñ ÊÑm ñ
Ñt yàn yàn Ñã kãm ññ

ikB&44
Õàtmà
ÑÊ qv ÊÑmã Ñ Õàtmà ñ
Ñt tàÂàw t u Õàtmà ññ
yãh ytl ¥yã Õàtmà ñ
q¼|m âvhm ¥yã Õàtmà ññ

ikB&45

Øàu

Øàu §ýà ¡n Ñàmà mãÂà

âmÊàÑ t Ñ ÊàÑ mâÂà ñ

âØàsk t ky skà mãÂà

qvàÎà t wy qÙà mâÂà ññ

ikB&46

ÖààÂà

qáÊwàÊ t âtvmà ÖààÂà

Îààvà t sã qàm ÖààÂà ñ

ªàÚkÂàà y âtvmà ÖààÂà

ÖààÂà y Ñàmà Ñ §ýÌuà½à ññ

ikB&47

ót

ywà §ýÊm Ñ ¢yy

hmã §ýÊm Ñ ót y ñ

hv§ýÀ Ñàm ¢yy

§ýàu yr Ñàm ót y ññ